1965C Rulers of Delhi in the Jain works

दिल्ली शासकों के समय पर नया प्रकाश

(ले० : पं० हीरालाल शास्त्री, ब्यावर)

★ ★

[भारत की राजधानी इन्द्रप्रस्थ का कब-कब कायापलट हुआ और किस-किस शासक ने कितने काल तक शासन किया आदि समस्याओं पर वि० सं० १७१० के हस्तलिखित गुटके पर आधारित लेख इतिहास-प्रेमियों के लिए मननीय है।

सम्पादक]

वैसे तो दिल्ली बहुत प्राचीन है और यह पांडवों की राजधानी रही है, पर उस समय इसका नाम इन्द्रप्रस्थ था। 'दिल्ली' यह नाम कब पड़ा, इस विषय में इतिहासवेत्ता विद्वान् एकमत नहीं है। साथ ही 'दिल्ली' नाम रखे जाने के पश्चात् मुगल सल्तनत कायम होने के पूर्व, कौन २ राजा इसके शासक हुए इसका भी क्रमबद्ध एवं परिपूर्ण विश्वसनीय उल्लेख अभी तक सामने नहीं आया है, हालांकि विद्वानों ने विविध प्रमाणों के आधार पर बहुत से शासकों का क्रमवार निश्चय करने का प्रयत्न किया है।

अभी मुझे ऐलक पन्नालाल दि० जैन सरस्वती भवन (जहां कि हस्तलिखित प्राचीन ग्रन्थों का बड़ता संग्रह है) के एक प्राचीन हस्त लिखित गुटके पर से 'दिल्ली' स्थापना काल से लेकर जहांगीर बादशाह के काल तक का व्यवस्थित काल–विवरण प्राप्त हुआ है, जिसे अविकल रूप में यहां दिया जाता है। यह गुटका वि० सं० १७१० के फाल्गुन सुदी ५ शनिवार का लिखा हुआ है। गुटके का आकार ५ + ६ इन्च है। पत्र संख्या ७३ है। प्रत्येक पृष्ठ में २२ पंक्तियां और प्रत्येक पंक्तियों में १७-१८ अक्षर हैं । गुटके का नंबर ८४० है।

दिवंगत प्रसिद्ध विद्वान् श्री विश्वेश्वरनाथ रेऊ ने अपने भारत के प्राचीन राजवंश प्रथम भाग में चौहान वंश के राजाओं का काल निर्णय करते हुए पृष्ठ सं० २५० पर सोमेश्वर का देहान्त वि० संवत् १२३६ में हुआ लिखा है। यह समय भी गुटके में दिये हुए समय से ठीक मेल खाता है। इसी प्रकार पृथ्वीराज चौहान, अनंगपाल, अकबर आदि के समयों का भी ऐतिहासिकों द्वारा निर्णीत समय से पूरा पूरा मेल बैठता है। इस गुटके में लिखित समय की सबसे बड़ी विशेषता तो यह है कि इसमें प्रत्येक शासक का समय वर्ष, मास, दिन और घड़ी के साथ विगतवार व्यवस्थित दिया हुआ है, जिससे कि अनेक शासकों का समय,जो अभी तक प्रकाशन में नहीं आया है, उस पर भी इससे प्रकाश ही नहीं पड़ेगा, अपितु उनके समय का भली-भांति निर्धारण किया जा सकेगा। गुटके के वे उपयोगी अंश इस प्रकार हैं–

सं० ८०९ वर्षे वैशाख ......[1]दिल्ली नगर वस्यो पुंटी गाडी राजा पाटि बिठा ते आसामी

संख्या	पाट	राजानी आसामी	वर्ष	मास	दिन	घडी	विवरण
१	राजा	बीसल तूंवर	१९	५	१८	१९	अनंगपाल 'प्रथम'
२	राजा	गांगेव	२१	३	२८	९	गंगदेव
३	राजा	पृथ्वीमल्ल	१९	६	१९	११	पृथ्वीराज तोमर 'प्रथम'
४	राजा	जयदेव	२०	७	२७	१५	×
५	राजा	नरपाल	१५	३	८	३	×
६	राजा	उदयसंघ	१४	४	९	९	उदयसिंह (उदयरवि)
७	राजा	जयदास	१६	७	११	१६	जयसिंह (जयदेव)
८	राजा	वाछल	२१	२	१३	१७	बच्छराज (वत्सराज)
९	राजा	पावक	२२	१	८	१६	पीवक (?)
१०	राजा	विहंगपाल	२१	६	५	११	विजयपाल
११	राजा	तोलपाल	२०	४	४	८	तेजपाल, नेकपाल
१२	राजा	गोपाल	१८	३	१५	८	×
१३	राजा	सुलखण	२५	१०	१०	१६	सुलक्षण

[1] यहां का पत्रांश टूटा है।

(पृष्ठ ४ का शेष)

मतलब नहीं कि जनता की खरी कमाई का पैसा टेक्सों के नाम पर गलत लोगों की जेबों में जावे। भ्रष्टाचारियों को जांच के समय अधिकारी प्रश्रय दें। यदि इसमें सुधार नहीं हुआ तो इस ४७ करोड़ की आबादी वाले देश में सद्भावना, लगन तथा ईमानदारी के बावजूद एक नंदाजी क्या सौ नंदाजी भी सुधार नहीं कर सकते। जब तक भ्रष्टाचार की यही स्थिति रहेगी, सरकारी खर्च कम नहीं होंगे और ये कमर तोड़ टेक्स बढ़ते ही रहेंगे। प्रजातंत्र में यही सबसे बड़ा दोष है। तानाशाह देशों में आदेश के पश्चात् पालन के भंग पर सजा ऐसी मिलती है कि उसके भय से नियम भंग करने का साहस ही नहीं हो पाता है। यहां कानून भंग करना बच्चों का खेल समझा जाता है। क्यों कि उन्हें विश्वास है कि अधिकारी वर्ग हमारी मुट्ठी में है।

– क्रमश:

* यह प्रवेशांक !

• पथिक चलता है – मार्ग की बाधाएं सहते-सहते वह श्रांत भी हो जाता है। पथ की छाया उसे नव जीवन प्रदान करती है। पथिक का छाया में विश्राम उसकी पराजय का सूचक नहीं, अपितु क्षितिज के उस पार पहुंचने का संबलाधार है।

• विश्राम से पथिक का थका मन साहस व उत्साह तो प्राप्त करता ही है साथ ही उसकी गति द्रुतगामी हो जाती है।

• 'वीर राजस्थान' पत्र का अतीत भी कुछ इसी प्रकार के कारणों से व्यतीत हुआ है। अब पुनः वीर राजस्थान नियमित रूप से प्रकाशित होगा। वैसे इस अङ्क को प्रवेशांक तो नहीं कहना चाहिए – कहना यह चाहिए कि इसका यह पुनः प्रवेश है।

• इस बार १२ पृष्ठों का यह अङ्क हम पाठकों को सौंप रहे हैं। आगामी अङ्क से यह प्रति सोमवार प्रकाशित हो कर नियमतः आठ पृष्ठों में आप तक पहुंचा करेगा।

★★

संख्या	पाट	राजा नी आसामी	वर्ष	मास	दिन	घड़ी	विवरण
१४	राजा	जसपाल	१६	४	१३	१	जयपाल
१५	राजा	कवरपाल	२१	३	११	८	किरपाल
१६	राजा	अनंगपाल	२६	६	१८	१०	अनंगपाल 'द्वितीय'
१७	राजा	तेजपाल	२४	१	६	११	विजयपाल
१८	राजा	महीपाल	१५	३	१७	१९	मदनपाल, मोहणपाल,
१९	राजा	उकतपाल	२१	२	१५	१६	अनेकपाल, कुतपाल
२०	राजा	पृथ्वीराज तुवर	२२	३	१६	१७	पृथ्वीराज तोमर "द्वितीय"

संवत् १२०९ चैत्र सुदि २ दिल्ली लड़ाई हुई। चउहाणा जीते। तुवर हारे। अत्र चउहाण राज्य बिठा ते लखीइ।

सं०	पाट	राजा नी आसामी	वर्ष	मास	दिन	घड़ी	विवरण
२१	राजा	वीसल चऊहाण	६	१	४	१५	विग्रहराज
२२	राजा	अमर गांगेव	५	२	३	११	अमर गांगेय
२३	राजा	पाहड	८	१	५	११	पृथ्वीराज चौहान 'प्रथम'
२४	राजा	सोमेसर	७	४	२	९	सोमेश्वर
२५	राजा	चोहड	४	४	०	८	+
२६	राजा	नाग दोण	३	१	५	८	नागदमन (?)
२७	राजा	पृथ्वीराज चऊहाण	६	०	०	०	+

सं. १२४९ वर्षे चैत्रवदि १४ चऊहाण हार्या। रोहवइ पट्ठाण आया। दिल्ली तुरकाणा हुआ छइ।

संख्या	तखत	तुरकनी पातसाह	वर्ष	मास	दिन	घड़ी	विवरण
२८	पातसाह	साहबदा राजनी मो०	१४	५	१७	१३	शहाबुद्दीन गोरी
२९	पा०	साह समसदी	२	३	१३	१५	शमसुद्दीन
३०	पा०	कुतबदीसाह	२६	६	७	२७	कुतबुद्दीन
३१	पा०	पेरोजसाह	३१	३	१०	१९	फीरोजशाह
३२	पा०	अमानत भाणजा	३	२	११	२१	+
३३	दा०	अलावदीन	३१	६	५	२	अलाउद्दीन 'प्रथम'
३४	पा०	समीरदीन	२१	०	५	२७	×
३५	पा०	ग्यासदीन	२१	०	१	१२	गयासुदीन
३६	पा०	समसदीन	१	६	१६	२७	शामसुद्दीन
३७	पा०	जलालदीन	६	६	६	६	जलालुद्दीन
३८	पा०	रुकनदीन	०	३	१३	९	रुकनुद्दीन
३९	पा०	अलादैत्य	१९	३	१५	११	×
४०	पा०	अलावदीन	४	१	१३	९	अलाऊद्दीन 'द्वितीय'
४१	पा०	कुतबदी जरवक	४	१	१३	९	कुतुबुद्दीन
४२	पा०	महमुंद बोहडा	२७	३	११	१३	मोहमदशाह
४३	पा०	पेरोजसाह	३७	३	१३	३	फिरोजशाह
४४	पा०	तुगलकसाह	०	३	१३	७	गयासुद्दीन तुगलक
४५	पा०	बुबकसाह	०	६	१५	१५	अबुबक तुगलक
४६	पा०	दौलतखान अमानत	७	१	१८	१	दौलतखान लोदी
४७	पा०	मलूखान तुगलक	८	८	१८	४	×
४८	पा०	महिमुंदसाह	१२	१	१९	२४	मोहम्मदसाह
४९	पा०	खिदरखान	८	८	१८	११	खिजरखान
५०	पा०	अलावदीन	०	३	१०	९	अलाउद्दीन 'तृतीय'
५१	पा०	अजन अलावदीन	३	३	८	१५	+
५२	पा०	बहलोलखान लोदी	३८	२	१८	१५	कलोलखान लोदी
५३	पा०	सकदर लोदी	२८	५	१२	१६	सिकन्दर लोदी

सं०	तखत	तुरकनी पातसाह	वर्ष	मास	दिन	घड़ी	विवरण
५४	पा०	अब्राहिम लोदी	१०	५	२७	१०	ईब्राहिम लोदी
५५	पा०	बाबर मुंगल	३	५	२२	१५	बाबरशाह
५६	पा०	हमाऊ मुंगल	१०	४	११	१७	हुमायु

सं० १५९७ जेठ सुद १२ मुगल हारे। सेरखान सूर जीत्या। दिल्ली बिठा साह आलमसूर हूया।

संख्या	तखत	पातसाह नाम	वर्ष	मास	दिन	घड़ी	
५७	पातसाह	साह आलमसूर	६	०	०	०	शेरशाह सूर
५८	पात०	सलेमसाह सूर	८	५	८	१३	सलिम शाह सूर
५९	पात०	पेरोजसाह सूर	०	०	३	६	फिरोजशाह सूर

ममरेज खान मार्या अदली नाम धराया।

६०	पात०	अदलो	०	१	३	४	मोहम्मद शा. अदली
६१	पात०	सकंदर	०	६	११	०	सिकंदरशाह

सकंदर गाजीखान अब्राहम सूर ३ तिहु हींदु घाल्यो।

६२	पात०	हर्मसाह दुजि आया	१	१	११	२	हिमायुं दुवारा
६३	राज्य	हेमु वणिक पाट बिठु	०	०	१६	५	+

विक्रमादित्य नाम धराया, वसतपाणी लड़ाई पड़ी। अकबर जीत्या। वणिक नाग (मारया) सम्वत् १६१३ फागुण सुदी २ अकबर-(मारा) जलालदीन पाट बिठा।

६४	पात०	अकबरसाह	४८	६	११	१५	अकबरशाह

साह सलेम जांगीर सम्वत् १६६२ मिगसर बदि १२ आगरा मध्ये पाट बिठा।

६५	पात०	जहांगीर सलेमसाह	२१	११	३	०	जहांगीर

सम्वत् १६८४ वर्षे जहांगीरे काल कीधुं। कातिक वदि अमांसि रवौ पाछि सुलतान बुलाखो नई कातिक सुदि २ पातसाही दीधी। तथा लाहोर माहि पातसाही सहिरइयारि लीधो। कातिक सुदि ४ ने दिने कास्मोर थो बुलाको आयो। कातिक सुदि १५ के दिनि सहिरइयार बंदी कीया। माह वदि १० रवौ बुलाको बंद कीया। माहवदि १२ दिने बुलाकी सहिरइयार प्रमुख जीवोया ववरोवीया कीधा॥ कहि छइ॥ लोकवादि॥ माह सुदि १० दिने आगरा माहि खुरम सुलतान पातसाही बिठा। च्यारि मास माहि एह बात हुई छइ॥ जेह वुं देख्यु तेहवुं लख्यु छि सही॥

जैन शास्त्र भण्डारों में भारतीय इतिहास की कितनी विपुल सामग्री भरी पड़ी है, यह बात ऐतिहासिक विद्वानों से अविदित नहीं है, फिर भी उनकी ओर हमारी भारत सरकार का ध्यान बिलकुल भी नहीं गया है। कहने को तो यह धर्म-निरपेक्ष सरकार कही जाती है, पर उसमें साम्प्रदायिकता का कितना बोलबाला है, यह इसी से प्रकट है कि उसकी ओर से अभी तक भी जैन भण्डारों की शोध-खोज ~~की ओर~~ के लिए कुछ भी प्रयत्न नहीं किया गया है। प्रत्युत जैनेतर विद्वानों के द्वारा जैन साहित्य साम्प्रदायिक कह करके उपेक्षित किया जाता रहा है। ~~मैं पूछना चाहता हूँ कि~~ क्या जैन विद्वानों द्वारा लिखे जाने मात्र से ही उसमें साम्प्रदायिकता की गन्ध आने लगती है? आज भारत की अनेक भाषाएँ ऐसी हैं, जिनमें लिखने का श्रीगणेश करने वाले जैन विद्वान ही रहे हैं और उन भाषाओं का इतिहास और साहित्य आज साम्प्रदायिक कहे जाने वाले जैन विद्वानों की कृतियों से ही स्पष्ट है।

भारत के इतिहास की आज तक जितनी भी शोध-खोज हुई है उसमें जैन विद्वानों की रचनाओं का, जैन शिलालेखों का और जैन मूर्तिकला एवं स्थापत्य कला का कितना महान् योगदान है, यहां यह बतलाने की आवश्यकता नहीं है। मैं भारत सरकार के शोध-खोज करने वाले पुरातत्त्व विभाग से खासकर के प्रेरणा करूंगा - कि वह भारत के जैन भण्डारों की अनुसन्धान कराये और उनके शोध-खोज के लिए विशेष रिसर्च स्कालरशिपों की व्यवस्था करे। जैन भण्डारों में विद्यमान असंख्य ग्रन्थों के अन्दर अपरिमित ऐतिहासिक, राजनीतिक एवं लोककल्याणकारी सामग्री विद्यमान है। जैन विद्वानों द्वारा रचित अपभ्रंश-साहित्य में उक्त सामग्री कितने विपुल परिमाण में उपलब्ध है, इसका श्री राहुल जी सरीखे महापंडितों ने अपने निबन्धों और लेखों में भारतीय विद्वानों का ध्यान आकृष्ट किया है। जब सन् १९४८ में मैं मथुरा जैन संघ के सरस्वती भवन का अध्यक्ष था, तब श्री राहुल जी यहां पधारे थे और उन्होंने मुझसे कहा था - कि अपभ्रंश साहित्य को प्रकाश में लाने का प्रयत्न जैन समाज को करना चाहिए। उस समय मैंने उनसे कहा था कि आज आपका भाषण जो चम्पा इण्टर-कालेज में होने वाला है, आप इसके विषय में कुछ प्रकाश डालिये। इसे उन्होंने स्वीकार किया - मगर दुर्भाग्य वश जब शाम को ६ बजे सभा प्रारंभ होने वाली थी - तभी महात्मा गान्धी के गोली से मारे जाने का समाचार रेडियो से मिला और वह सभा शोक सभा में परिणत हो गई और एक शोक-प्रस्ताव करके ही समाप्त हो गई। राहुल जी उस दिन जो कुछ जैन भण्डारों में सुरक्षित साहित्य के विषय में कहना चाहते थे, वह नहीं कह सके।

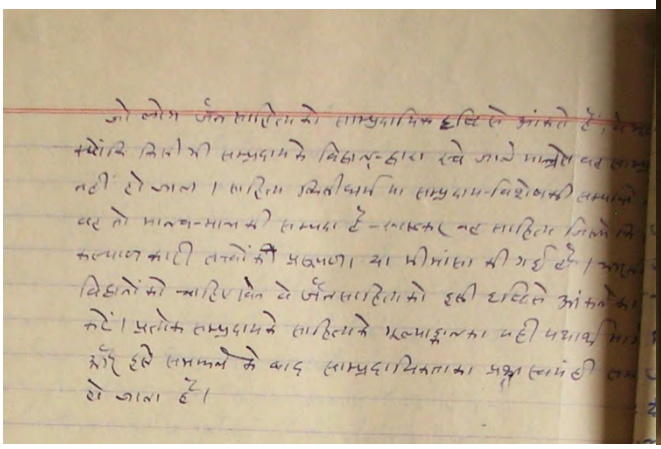

जो लोग जैन साहित्यको साम्प्रदायिक दृष्टि से आंकते हैं, वे
क्योंकि किसी भी सम्प्रदायके विद्वान्-द्वारा रचे जाने मात्रसे वह साम्प्र
नहीं हो जाता। साहित्य किसी धर्म या सम्प्रदाय-विशेषकी सम्पत्ति
वह तो मानव-मात्रकी सम्पदा है - खासकर वह साहित्य जिसमें
कल्याणकारी तत्त्वोंकी प्ररूपणा या मीमांसा की गई है।
विद्वानोंको चाहिए कि वे जैनसाहित्यको इसी दृष्टिसे आंकनेका
करें। प्रत्येक सम्प्रदायके साहित्यके मूल्यांकनका यही यथार्थ मा
और इसे समझने के बाद साम्प्रदायिकताका प्रश्न स्वयं ही सम
हो जाता है।

दिल्ली के प्राचीन राजा
(महाभारत के आधार पर)

क्रम-राजा	वर्ष - मास - दिन
युधिष्ठिर	३२ - ८ - २५
परीक्षित	६० - १ - ०
जनमेजय	४८ - ५ - २७
अश्वमेध	८२ - ८ - २४
धर्म	८८ - २ - ८
मनजीत	८१ - ११ - २४
जलरथ	७५ - ८ - ८
दीपपाल	७५ - १० - १८
उग्रसेन	७७ - ७ - २४
सूरसेन	७९ - ८ - ६
भूपति	६१ - ५ - २
रणजीत	६५ - १० - २९
वीरजित	६४ - ७ - ३
भीमसेन	५५ - ८ - २९
शुकमलदेव	६२ - ० - ३
नरहरिदेव	६१ - १० - ४
सुजितरथ	७२ - ११ - ३
शूर	५८ - ० - ८
पर्वति	५० - ८ - २१
मधुकाशाह	५२ - ४ - ७
टोडरमल	४८ - १० - २९
भीमदेव	४७ - १० - २९
नरहरिरथ	४७ - ११ - ०
पूर्णमल	४४ - ८ - १७
सारंगदेव	५६ - ० - ०
रूपदेव	५४ - १० - २
अभिमन्यु	५१ - ११ - ८
धनपाल	४८ - ७ - ४
भीम	५८ - ५ - १५
लक्ष्मीदेव	४८ - ११ - २१
योग	१८५३ - ११ - ०

इसके बाद लक्ष्मीदेवके प्रधान वीरसेनने देवको मारकर राज्य ले लिया। उसके वंशज-

क्रमांक	राजा	वर्ष - मास - दिन
३१	वीरसेन	१७ - ७ - ०
३२	हरिसेन	३२ - ८ - ०
३३	अनन्तशाह	३७ - ८ - २३
३४	वीरशाह	३२ - १० - ७
३५	हरिरूप	३५ - ९ - १७
३६	सुलोचन	४३ - १ - ४
३७	पर्वति	४२ - ९ - २४
३८	सूरपाल	३८ - २ - ५
३९	रूप	३५ - ४ - १४
४०	पृथ्वीराज	३१ - ८ - ११
		३४७ - ९ - २६

इसके बाद पृथ्वीपालके मंत्री नरहरिनाथने पृथ्वीपालको मारकर राज्य ले लिया। उसके वंशज-

क्रमांक	राजा	वर्ष - मास - दिन
४१	नरहरिनाथ	१५ - १० - ८
४२	जेतसिंह	२७ - ७ - १५
४३	बैरामगत	२१ - २ - १३
४४	दीपपाल	३५ - ४ - १
४५	महाबल	३५ - ८ - ७
४६	अमृतपाल	२८ - ८ - १०
४७	जेतपाल	२८ - ११ - १०
४८	माणिकचंद	२९ - ७ - २१
४९	कामचंद	३२ - ५ - १०
५०	हरगोण	१७ - ० - ११
५१	जीवनगोण	२३ - ९ - १७
५२	सीमवंग	१३ - ७ - २९
५३	त्रिविक्रम	१० - २ - १०
५४	मालमल	२३ - ११ - २४
५५	भूपति	१० - २ - २
५६	उदितकंठ	३५ - २ - २०
		३८९ - ६ - ८

इसके बाद उदितकंठको मंत्रीने उसको मारकर राज्य ले लिया। उसके वंशज —

संख्या	नाम	वर्ष मास दिन
५७	मंगी (?)	२४ - २ - ०
५८	चन्द्रपाल	२६ - ९ - २४
५९	सुन्दरपाल	२१ - ४ - १८
६०	देशपाल	१९ - १ - ११
६१	रसिकपाल	१८ - ० - १२
६२	अनन्तपाल	१८ - ० - २२
६३	रामपाल	३७ - ११ - १२
६४	गोविंदपाल	२७ - ७ - २७
६५	भीमपाल	१६ - १० - १३
६६	आरतपाल	१६ - ७ - १९
६७	हलपाल	१२ - ५ - २७
६८	भूपपाल	१४ - ९ - २२
६९	हरिपाल	१३ - ८ - ४
७०	मदनपाल	१७ - ७ - १९
७१	कर्णपाल	१५ - २ - २५
७२	विक्रमपाल	१९ - ११ - १३
		३११ - ५ - ८

(अन्य आधारों से)

राजा विक्रमपाल को उनके वजीर सआदतखां ने मार कर राज्य छीन लिया। इसके बाद दिल्ली में बड़ी गड़बड़ी मची। जिन्होंने राज्य किया उनके नाम—

संख्या	नाम	वर्ष मास दिन
७३	सआदतखां	२४ - ० - ०

इसे मारकर विक्रमसिंह ने राज्य लिया

संख्या	नाम	वर्ष मास दिन
७४	विक्रमसिंह	३३ - ० - ०
७५	मुलकचंद	० - २ - २
७६	विक्रमचंद	१२ - ७ - १९
७७	कुलचंद	० - २ - २
७८	रामचंद	१३ - ११ - ७
७९	कल्याणचंद	१० - ५ - ४
८०	भीमचंद	१४ - ९ - १४
८१	सूरचन्द	२६ - ३ - २१
८२	भीमचन्द	१६ - ३ - १

संख्या	नाम	वर्ष
८३	गोविन्दचन्द	३१ -…
८४	मायावती	५ -…
८५	प्रतिमल	७ -…
८६	गोविन्द	२० -…
८७	पूर्णहिम	७ -…
८८	महानन्द	२३ -…
		२४४

इसके बाद नीचे लिखे राजाओं ने

संख्या	नाम	वर्ष
८९	जयसिंह	१८ -…
९०	मालुसेन	१२ -…
९१	शूरसेन	१४ -…
९२	गन्धर्वसेन	११ -…
९३	देवसेन	१० -…
९४	भूसेन	५ -…
९५	कल्याणसेन	४ -…
९६	हरिसेन	१२ -…
९७	ब्रह्मसेन	८ -…
९८	नारायणसेन	५ -…
९९	लक्ष्मीसेन	१६ -…
१००	दामोदरसेन	११ -…
		१३२

इसके बाद माधवसिंह उत्तर से आ[illegible] मार कर राज्य ले लिया। इसके वंश[illegible]

संख्या	नाम	वर्ष
१०१	माधवसिंह	१७ -…
१०२	दीपसेन	१४ -…
१०३	राजसिंह	१२ -…
१०४	शेरसिंह	१० -…
१०५	बीरसिंह	२५ -…
१०६	नृपसिंह	८ -…

इसके बाद नृपसिंह को राज्य धीरसिंह ने मार[illegible]

संख्या	नाम	वर्ष
१०७	धीरसिंह	२२ -…
१०८	सेन	३५ -…

नाम-राजा	वर्ष-मास-दिन
लोकजी	३५ - २ - ८
महानु	२० - ३ - ९
बीरनाथ	२८ - ५ - २४
जीवन	२२ - २ - २४
उदयसिंह	२७ - ४ - २९
कुलानन्द	२२ - ३ - ८
राजपाल	१३ - २ - ६
	२२७ - ५ - २६

[illegible] पृथ्वीपाल कुमाऊँ से आया। उसने राजपाल [illegible] राज्य लिया। उसके वंशज—

नाम-राजा	वर्ष-मास-दिन
पृथ्वीपाल	१४ - ७ - १७
उजनपाल	१२ - ७ - १३
उदयपाल	१३ - ७ - १४
चैनपाल	१९ - २ - १९
राम पिथौरा (पृथ्वीराज चौहान)	३६ - ४ - २५
	६५ - ४ - २८

दिल्ली के बादशाह

नाम		ईस्वीसन कबसे कबतक
शहाबुद्दीन मुहम्मद	"	११८६ - १२०६
कुतुबुद्दीन	"	१२०६ - १२१०
शमसुद्दीन अल्तमश	"	१२१० - १२३५
सुलताना रज़िया	"	१२३६ - १२३९
मोइजुद्दीन बहराम	"	१२३९ - १२४१
अलाउद्दीन मसऊद	"	१२४१ - १२४३
नासिरुद्दीन महमूद	"	१२४३ - १२६६
बलबन	"	१२६६ - १२८६
कैकुबाद	"	१२८६ - १२८८
जलालुद्दीन	"	१२८९ - १२९५
अलाउद्दीन	"	१२९६ - १३१६
मुबारिक	"	१३१६ - १३२०
गयासुद्दीन	"	१३२० - १३२६